# समर्पण

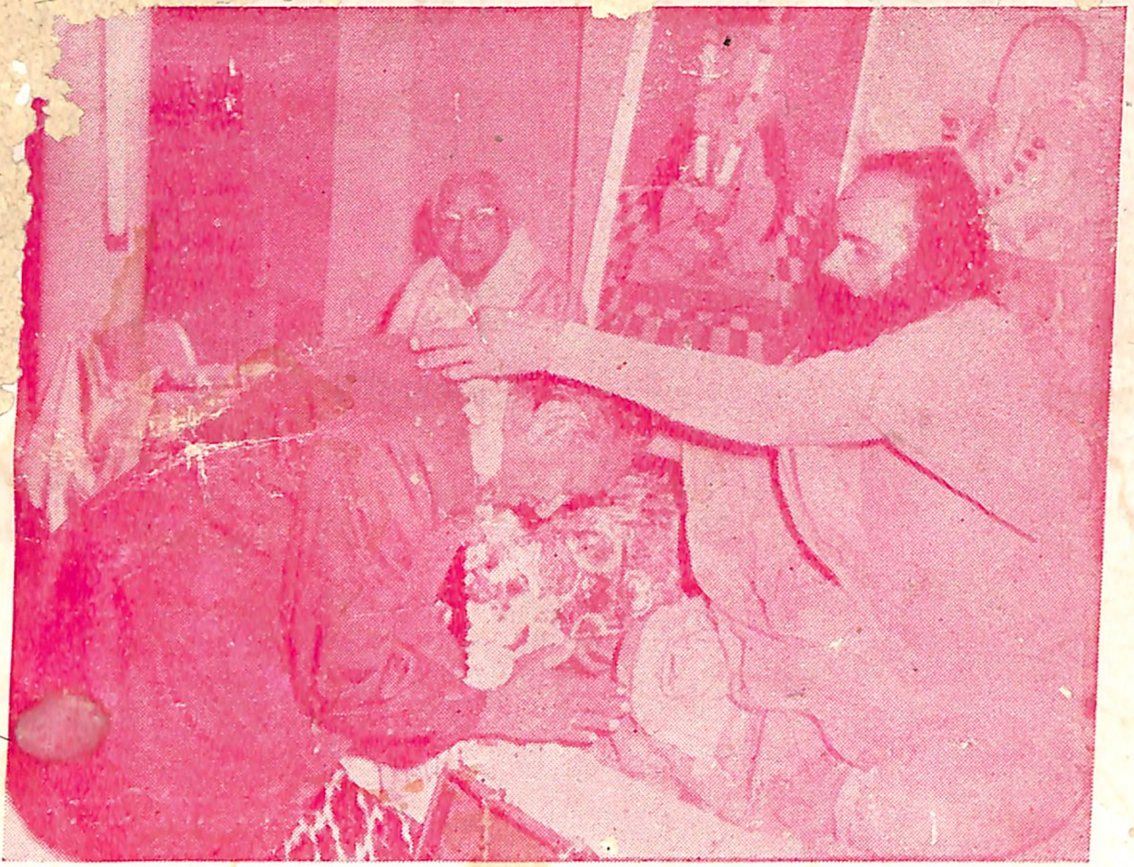

कहीं झुका है जो सर हमारा,
किया है हमने तुम्हीं को सजदा।
कभी किसी से जो बात की तो,
किया तूम्हीं को ख़िताब हमने ।।

—शिफ़ा

CC-0 Pulwama Collection, Digitzed by eGangotri

यह पुस्तक
मैं अपनी प्यारी
जीवन साथी
सरस्वती
को
अर्पण करता हूँ

—प्रेम लाल शिफ़ा

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सरस्वती अविनाशी
1920-1980

मैं अकेला कब रहा एक रोज़ भी तेरे बग़ैर
किस तरह गुज़रेगी बाक़ी ज़िन्दगी तेरे बग़ैर
--शिफ़ा-24-9-80

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# समर्पण

21-9-80 ६७वाँ जन्म दिवस

डा॰ प्रेमलाल शिफ़ा देहलवी
सदर बाजार, देहली-६

फ़ोन निवास : 51 21 42
51 26 14

क्लिनिक : 51 34 89
51 22 87
52 29 99



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

[ ओ३म् श्री गुरुवे नमः ]

प्रथम बार

संख्या : 500 प्रतियाँ

मूल्य : ८। रु०

संपादक : श्री अविनाशी मिशन

रचियता : डा० प्रेमलाल शिफ़ा देहलवी

मिलने का पता :— श्री अविनाशी मिशनाश्रम
गौशाला नगर, वृन्दावन
ज़िला मथुरा उतरप्रदेश

गीता आश्रम उरई
जिला जालौन (उ० प्र०)

डा० प्रेमलाल शिफ़ा
4835, सदर बाजार, दिल्ली-110006



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# निवेदन

अपने घर और किराये के घर में बड़ा फ़र्क़ होता है। अपने घर में सुरक्षा होती है, कोई खाली करने को नहीं कह सकता, आज़ादी होती है। जिस तरह चाहे इस्तेमाल करो, तोड़ो, बनाओ, बढ़ाओ, कोई मना नहीं कर सकता। उस के कोने-कोने से प्यार टपकता है और सबसे बढ़कर एक अपनापन होता है, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। इसके बरअक्स किराये के मकान में बेगानापन होता है। भरोसे का अभाव रहता है आज़ादी नहीं होती और दुविधा बनी रहती है। इसी तरह जीव आत्मा जब तक किराये के मकानों में रहती है वो बार–बार खाली करने पड़ते हैं और नए ढूंढ़ने पड़ते हैं और इस काम में बराबर कठिनाई पेश आती रहती है तो फिर अपने घर की तलाश करती है और उसमें जाकर हर तरह सुखी हो जाती है। बात असल में जीव की कहना चाहता था, जीव आत्मा की नहीं लेकिन—

**ज़िक्र जब छिड़ गया क़यामत का।**
**बात पहुंची तेरी जवानी तक ।।**

वृन्दाबन में बचपन से आना जाना रहा है। साल में एक या दो यात्रा हो ही जाती थी। बिहारी जी की सदा कृपा रही है लेकिन ठहरना धर्मशालाओं में होता था। कभी एक में, कभी दूसरी में, कभी तीसरी में। अब दो साल से गुरुदेव की कृपा से अपना आश्रम बन गया है। अपना है इसलिये ऊपर लिखी हुई सब सुविधाएँ इसमें हैं।

मेरे बहुत से दोस्त, खास तौर पर शायरी की लाइन वाले कहते रहते थे कि हमने वृन्दावन नही देखा। कभी तुम्हारे साथ ही देखेंगे लेकिन चूँकि अपना ही कोई ठिकाना न था तो उनको लाकर कहाँ ठहराता। अब आश्रम बन गया तो मैंने सोचा उनकी बात भी पूरी कर दी जाए। अब मौक़े का इंतज़ार था क्योंकि :
हीला कोई तो बहरे मुलाक़ात चाहिए।

इसलिए सोचा कि इस बार जन्म दिवस वृन्दावन में अपने आश्रम में मनाया जाये। सब दोस्त वृन्दाबन भी देख लेंगे और आश्रम भी और दो दिन



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

महाराज जी कीं छत्र-छाया में रहकर एक नए सुख का अनुभव कर सकेगें। इस तरह बाज़ दफ़ा ज़िन्दगी नया मोड़ ले जाती है।

28-9-80 के लिये यह सब प्रोग्राम बन चुका था लेकिन प्रभू को मन्ज़ूर न था और 24-9-80 को मेरी ज़ीवन साथी अपने लोक सिधार गई और जन्म दिवस मनाने का सिलसिला सदा के लिये खत्म हो गया क्योंकि यह काम उसी का था।

इस उम्र में जन्मदिवस मनाना कोई ख़ुशी या उत्साह की बात नहीं होती थी थे सिर्फ़ साल भर में एक दफ़ा तमाम दोस्तों को इकट्ठा करने का एक बहाना बना रखा था क्योंकि एक ही शहर में रहते हुए भी बहुत से दोस्तों से पूरे साल में मिलना नहीं होता, इस बहाने से साल में एक बार मुलाक़ात हो जाती थी। यह ख़याल मेरा ही नहीं, उनका भी था। वो भी अपने सब काम छोड़कर इस दिन आ ही जाते थे और वो भी यही महसूस करते हैं कि ये ग़नीमत है कि साल में एक बार तो मिलना हो ही जाता है और 21 सितम्बर की इतंजार में रहते थे। आज कल मसरुफीयात और जिम्मेदारियाँ सबकी इस कदर बढ़ गई हैं कि जब तक खास तौर पर कहीं जाने या किसी से मिलने का इरादा न करें उस वक्त तक रोज़ाना के टाईम-टेबल में इसकी गुंजाइश नहीं होती और मेरी उम्र के साथियों के साथ यह भी है की मेरी तरह सबकी कर्म-इन्द्रियों ने मुहँ फेर लिया है। ये भी आसानी से किसी फालतु काम के लिए तैयार नहीं होती, इनको बताना पड़ता है कि यह काम तो करना ही पड़ेगा।

अब एक दो बातें इस किताब के बारें में अर्ज करनी है। इस का नाम 'समर्पण' रखा है कोई खास बजह नहीं बता सकता सिवाय इसके कि अन्दर से यही आवाज़ आ रहीं है कि काम बहुत बाकी है और वक़्त थोड़ा रह गया है, पूरा करना तुम्हारे बस की बात नही है अपने आप को गुरुदेव के हवाले कर दो फिर वो जानें जिस तरह पूरा करें।

इसमें कुछ नज़में तो उस गोराशाही हिन्दी में है जो मैंने अपनाई है। आधी उर्दू और आधी हिन्दी। मगर किसी तरहअपनी बात समझाने की कोशिश करता हूँ और लोग समझ भी लेते हैं। कुछ गज़लें हैं लगभग एक साल पहले दो साल तक ज़बान पर ताले पड़ गए थे। दो साल में एक गज़ल भी न कह सका ऐसा महसूस होने लगा था कि अब कभी शेर न कह सकूंगा। तबीयत घुट-घुट कर रह जाती थी। लेकिन आखिरकार प्रभु कृपा से और गुरु कृपा से ये बांध टूटा और कुछ गजलें कही वो तमाम इस किताब में दे दी हैं और कुछ पहले की हमारे दोस्त और रहबर आलीजनाब जेनाथ कौल को इसमें से अक्सर बहुत पसन्द हैं और उनमें से कुछ तो



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

उन्होंने और एहलेज़ोक़ को भी पसन्द करवा दी हैं वो सब इसमें शामिल कर दी हैं।

गऊशाला नगर जहाँ हमारा आश्रम है वो एक तपोभूमि है। वहाँ बहुत उच्चकोटि के सन्त ही रहते हैं। पहले सोचा था कि उनका कुछ हाल लिखूँ इसके लिए सबसे पहले बृज शिरोमणि श्री स्वामी टाटम्बरी महाराज के पास गया वो फरमाने लगे कि तुम पाँच मिनट में हमारे बारे में क्या जान सकते हो और हम खुद क्या बतायें यह तो उनसें मिलकर मालूम करो जो हमको मुद्दत से जानते हैं। बात ठीक थी इसलिए फिलहाल मैंने ये इरादा तर्क कर दिया क्योंकि मेरे पास वक्त नहीं और इस काम के लिए बहुत वक्त चाहिए। जिस तरह मन्त्र बरसो लगातार जपने के बाद खुलता है। संत उससे भी ज़्यादा संग और सेवा के बाद अपना भेद देते हैं।

दो अल्फ़ाज़ परम् पूज्य स्वामी मोहन आनन्द जी महाराज के बारे में लिख कर बात खत्म करता हूँ। ये स्वामी जी हमारे गुरुदेव के परम् मित्र हैं और हम लोगों पर इनकी कृपा उतनी ही रहती है जितनी अपने सेवकों पर। इनका आश्रम भी गऊशाला नगर में ही है। बहुत उच्चकोटि के संत श्री मद भागवत और दूसरे सब ग्रन्थों के ज्ञाता हैं। इनकी विशेषता यह है कि स्वामी की सेवा करके तो सब सुख का अनुभव करते हैं पर ये सेवकों की सेवा करने में मग्न रहते हैं। इनके दर्शनों से मनोमाया कोष में तो कृपा और प्रेम की अनुभूति होती ही है। अन्नमाया कोष में भी चांदना हो जाता है क्योंकि स्वामी जी चाय जरूर पिलाते हैं और उस चाय का स्वाद सिर्फ पीने वाले ही जानते हैं और जो जानना चाहें पीकर जान लें। मेरे लिए वृन्दाबन में आकर जितने बिहारी जी के दर्शन जरूरी हैं उतना ही जरूरी इनके चरण कमल स्पर्श करना भी, उसके बगैर तृष्णा-सी बनी रहती है।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

नाम लेते हैं शिफ़ा
उनका बिला तसबीह के ।
प्यार से जब नाम लेना हो
तो क्या गिन-गिन के लें ।।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

क्या है सिवाय दोस्त के
मोज़ुये गुफ्तगू ।
या दोस्ती की बात हो
या बन्दिगी की बात ।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

शिफ़ा हमको ख्याले दोस्त से
फुरसत नहीं मिलती
हमारी बज्म में ज़िकरेफुलां
इबनेफूलां क्यों हो ।।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# श्री गुरुदेव का जन्म

नयनों के कलश सजा लाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।
दर्शन का लाभ उठा जाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।
फल फूल मिठाई ले आओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।
मंगलमय गीत सभी गाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।

सावन के रसीले मौसम में, अद्वैत का सूरज निकला है ।
वैराग्य के झूले डलवाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।
इस रंग रंगीले मौसम में, बेचारा ज्ञान अकेला है ।
उसको भक्ति से मिलवाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।

अज्ञान की तपती धूप में हम आये हैं प्यास से व्याकुल हैं ।
अब ज्ञान की मदिरा पिलवाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।
ये राग द्वेश के कांटे जो फैलाते हैं, फैलाने दो ।
तुम प्रेम की चादर फैलाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।

संसार में आने वालो तुम, संसार के दुखते सीने पर ।
सेवा की छाप लगा जाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।
जीना-मरना कुछ बात नहीं, तुम देहि कभी विदेही हो ।
उससे भी छुटकारा पाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।

गुरुदेव के जितने सेवक हैं, सावन की शुक्ल पक्ष छट पर ।
सबको वृन्दावन बुलवाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।
संसार है दुःख का धाम शिफा, गुरुचरणों में सुख मिलता है ।
गुरु चरणों की महिमा गाओ, साकार हुए हैं अविनाशी ।।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# श्री गुरुदेव की पूजा

नैनों से नीर चढ़ायेंगे, गुरुदेव की पूजा करनी है।
श्रद्धा के फूल सजायेंगे गुरुदेव की पूजा करनी है ।।

मन में घी लेंगे सेवा का और प्रेम की डालेंगे वाती।
फिर ज्ञान की जोत जगायेंगे गुरुदेव की पूजा करनी है ।।

फल लेकर अच्छे कर्मों के और मीठा मीठी बानी का।
हम उनको भोग लगायेंगे गुरुदेव की पूजा करनी है ।।

चरणों में अर्पण कर देंगे, तन भी, मन भी, धन भी उनके।
माया को मार भगायेंगे, गुरुदेव की पूजा करनी है ।।

अपने को मिटा देना ही शिफ़ा गुरुदेव की सेवा पूजा है।
हम बस उनके बन जायेंगे गुरुदेव की पूजा करनी है ।।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# जीवन युद्ध

## (आल्हा)

दिल में प्यार की थी चिंगारी अब वह आग सुलगती जाय
प्रेम की धारा रोक रखी थी अब वह नदिया बनती जाय
ले वैराग विवेक के चप्पू पहले तो हम खेते थे।
अब गुरुदेव बनें हैं केवट नइया आगेबढ़ती जाय
करमें लेकर चक्रशुदर्शन गुरु हुये सन्मुख जबसे
भागे छोड़ के माया-मोह अज्ञान की गर्दन कटती जाय
राह में दो दीवारें थीं इक ममता इक आसक्ति की
रस्ता साफ़ हुआ जाता हर एक रुकावट हटती जाय
जीवन युद्ध महाभारत का मैं अर्जुन गुरुदेव कृष्ण
गीता का उपदेश मिले हैं मन की भूल निकलती जाय
देख-देख कर दुनियां को थक-थक कर लौट आईं नज़रें
बाहर मुख दृष्टि थी जो वह अब अन्तर्मुख होती जाय
अन्दर है आनन्द का सागर शेषनाग की शइया है
उस पै शिफ़ा भगवान लक्ष्मी ये तस्वीर उभरती जाय



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# अब तो साजन आन मिलो रे

दुनियाँ का कुछ सार नहीं है
वैरी है ये यार नहीं है
मन का कुछ आधार नहीं है
आरत की फ़रियाद सुनो रे

अब तो साजन आन मिलो रे ।।

मुझ पे जो होनी थी होली
अब तो न खेलो आँख मिचोली
भरते हो दुनियाँ की झोली
मेरा भी कल्याण करो रे

अब तो साजन आन मिलो रे ।।

मथुरा में काशी में ठूंडा
हर तीर्थ पर तुमको देखा
हर मन्दिर में तुमको पूछा
मन का मन्दिर और रह्यो रे

अब तो साजन आन मिलो रे ।।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

कोई तुमको कहे पुरारीं
कोई कहता रास बिहारी
कोई कहता है बनवारी
मैंने सोहम् नाम धरो रे

अब तो साजन आन मिलो रे ॥

मैं हारूँ ये रीत नहीं है
इसमें तुम्हारी जीत नहीं हैं
तुमसा कोई मीत नहीं है
प्रेम किये की लाज रखो रे

अव तो साजन आन मिलो रे ।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# (कछु लेना न देना मगन रहना)

मेरे जीवन की बनकर फब्बन रहना
कछु लेना न देना मगन रहना ॥

तुम मिरे सूर्ये तुम मिरे – चन्द्रमां,
तुम मिरे तारागण तुम मिरे आसामाँ
मेरी आँखों की ज्योति मिरे मंहरवाँ,
मेरी आँखों में आकर सजन रहना
कछु लेना न देना मगन रहना ॥

रुख बदलता है जीवन बदलता रहे,
दिन जवानी का ढ़लता है ढ़लता रहे
तुमतो जब तक मेरा श्वांस चलता रहे,
मेरी श्वासों में बनकर पवन रहना
कछु लेना न देना मगन रहना ॥

बेरुख़ी मेरा विश्वास लूटे नहीं
तुम कहों हो मिरा ध्यान छूटे नहीं
तुम मिलो ना मिलो आस टूटे नहीं,
मन में आशा की बनकर किरन रहना
कछु लेना न देना मगन रहना ॥

कुछ न दरकार अपनी खुशी के लिये,
कुछ नहीं चाहिये ज़िन्दगी के लिये
प्यार तुमसे किया प्यार ही के लिये,
दिल में अपनी ही होकर लगन रहना
कछु लेना न देना मगन रहना ॥

तुमसे बढ़ जाय इतनी शिफ़ा की लगन,
दूर हो जाय विरहा की दिल से चुभन
ज़िन्दगी में रहे नित नया ताज़ा पन,
मन की बगिया में खिलते सुमन रहना
कछु लेना न देना मगन रहना ॥



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# होली

बन्धन थे जीने मरने के कर्मों का बोझ भी था भारी,
जीवन के संकट काट गयी गुरुदेव तुम्हारी पिचकारी

माया का यह संसार बना औस विषियों के बाज़ार सजे,
हम वनजी करने आये थे हम थे कर्मों के व्योपारी

अज्ञान का सिक्का चलता था हम भी वह पूँजी लाये थे
व्यौपार बड़ा ही करना था आये थे करके तैयारी

कुछ रिशते साथ हुये पैदा कुछ और नये हमने जोड़े
इन ममता मोह के रिश्तों में फिर उलझ गई जाँ बेचारी

इन प्यार के सौदों में हमको हर बार हुआ बढ़कर घाटा
जिन-जिन पर जान निछावर की वो बिछुड़ गये सव नर-नारी

घाटों में पूंजी ख़त्म हुई अज्ञान का निकला दीवाला
और मोह की बस्ती भस्म हुई जब पड़ी ज्ञान की चिंगारी

यूं लुटे-पिटे हम बैठे थे फिर हमने इधर उधर देखा।
उस वक्त नज़र आये हमको हँसते गुरुदेव जटाधारी

वो-बोले क्यों घबराते हो जल गई होलिका कर्मों की
लो आओ चलो होलो खेलें आये हैं व्रज के बनवारी

गुरुदेव का हम पर रंग चढ़ा जब उनसे शिफ़ा होली खेले
हम निजआतम में आन बसे जब लगी गुरु की पिचकारी



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# कोई मेरे साजन को बुला दो !

नैन मिले जिस वक्त पिया से, फिर क्या काम रहा दुनिया से ।
बारम्बार मिले हैं वासे, नैना फिर भी रहे हैं प्यासे ॥

इन नैनन की प्यास बुझा दो ।
मुझ से मेरा मीत मिला दो ॥

दिन को उसकी याद सताए, रात को बैरन नींद न आए ।
दिल तड़पे मुझको तड़पाए, कौन मेरे दिल को समझाए ॥

कोई मेरे दिल को समझा दो ।
दिल से दिल का मीत मिला दो ॥

मैं दीवानी बाल बखेरे, पी दर्शन को सांझ सवेरे ।
उसकी गली के करती फेरे, कौन मेरे साजन को टेरे ॥

कोई मेरे साजन को बुला दो ।
मुझ को उसका दर्श दिखा दो ॥

किस से बात कहूँ मैं जी की, वा बिन सारी दुनिया फीको ।
सांसों में है आस उसी की, वर्ना क्या काया माटी की ॥

माटी को माटी न मिला दो ।
सांसों में साजन को बसा दो ॥



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

मोहब्बत ओज पर आई है चुप रहते नहीं बनता
हिदायत है ज़बां बन्दी की कुछ कहते नहीं बनता

न जाने क्यों हुई पेदा तमन्ना दिल में साहिल की
लगादो पार अब मँझधार में बहते नहीं बनता

बस अब जाने भी दो रूदादे पै फुरकद खत्म कर डालो
नक़ाहत बढ़गई है और ग़म सहते नहीं बनता

नहीं मालूम कब मैं होश की हद से गुज़र जाऊँ
जुनूं आवाज़ा कश है होश में रहते नहीं बनता

थिफ़ा अरमां भरे हैं दिल में लाखों उनसे कहने को
उधर वो वे निहाज़ीहै कि कुछ कहते नहीं बनता

भावार्थ—

(१) पिछले दो साल से गोया ज़वान पर ताले डाल दिये थे। बहुत कोशिश करने पर भी साल में एक शैर भी न कह सका ये महसूस होने लगा था कि शायद अब ज़िन्दगी में और शैर न कह सकूंगा, ये पाँच शैरों के ग़ज़ल बड़ी मुश्किल से कही लेकिन इसके बाद मन के श्रौत खुल गये। इस किताब में ज्यादातर कलाम इसके बाद का ही है।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

दिल पर गहरी चोट लगी थी फिर भी हम घबराये कम।
प्यार में हमने मात भी खाई लेकिन हम पछताये कम

ग़म का जो सैलाब चला था सीने में ही रोक लिया
दिल में था जज़बात का तूफ़ां हमने अश्क बहाये कम

दुनियाँ थी शतरंज की बाज़ी और हवस का जाल भी था
हम भी थे इस खेल में शामिल जाल में लेकिन आये कम

इश्क़ की राहें रंगीं थीं कुछ लोग हमारे साथ रहे।
राहे वफ़ा पुरख़ार थी इतनी साथ हमारे आये कम

एहलै हवस थे उनमें ज़िआदा जिनसे यहाँ मुठभेड़ हुई
आंखों से आंखें तो लड़ी हैं दिल से दिल टकराये कम

लज्ज़ते ईज़ा इतनी है हमको तो मुदावा रास नहीं
दाग़ तो दिल पर और भी थे चारागर को गिनवाये कम

आप में थे औशाफ़ हज़ारों हममें कोई बात न थी।
आपको अक्सर याद किया है आपको हम याद आये कम

प्यारी थी हर चीज़ चमन की बूटे डाली गुनचे क्या
कांटो से भी प्यार किया है दामन से उलझाये कम

सारे पापड़ बेले हैं अब अपना है ये क़ोल थिफ़ा
खुश रहना हो दुनियां में तो दुनियाँ को अपनाये कम॥



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

जिन्दगी है बारगाहे दोस्त में आने का नाम
मौत है दुनियाँ के धन्धों में उलझ जाने का नाम

मैं परस्ती है कि पीकर पाँव को लग़ज़िश न हो
मैं कशी है जाम दो पीकर बहक जाने का नाम

बे खुदी है नेको बदमें हो न कोई इन्तयाज़
होश है आमाले बदके बाद पछताने का नाम

बे नियाज़ी है कि दिल में आर्ज़ू कोई न हो
है कनाअत हाले वदमें दिल को समझाने का नाम

आशिकों से दूर रहना हुस्न का अनदाज़ है
आशिकी है हुस्न पर कुरबान हो जाने का नाम

इश्कवो हैं-हेच हो सब कायनात उनके बैग़र
बस्ल है खोकर खुदा उनमें समा जाने का नाम

बन्द आँखों में नज़र बो आयें यह हैं ज़ोके दीद
जज़बये दिल उनके दिल तक बात पहुंचाने का नाम

उनके आगे सर झुका देना है उनकी बन्दगी
और इरफ़ां उनको अपने आपमें पाने का नाम

ऐ शिफ़ा दस्ते दुआ उठ्ठे तो है तोहीने इश्क़
और दरयूज़ा गरी है हाथ फैलाने का नाम।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

रहेंगे आप मुझ पर इ़स तरह ना मेहरबाँ कब तक
ये परदा शौक़ का हाइल रहेगा दरमियां कब-तक
मुझे कब-तक सतायेगा अभी आज़ार फुरकत का
मुझे लिखनी पढ़ेगी और ग़म की दासतां कब तक
गरीबां चाक मैं कब तक फिरूँगा दश्ते बहशत में
मिरे दामन की यू उड़ती फिरेंगी धज्जियाँ कब तक
मिरी दीवानिगी का आख़िरश अंजाम क्या होगा
इस आशुफ़तासरी का साथ देंगे जिसमो जां कब तक
कोई हद भी मुक्क़र्र की है मेरी तस्ना कामी की
मुझें दो घूँट को तरसायेगा पीरे मुग़ां कब-तक
मुझे कुछ अर्ज करने के लिये इरशाद कब होगा
अभी रहना पड़ेगा और मुझको बेजवां कब तक
तुम्हारी राह में मंजिल मिरी आसांन कब होगी
तुम्हारी चाह में पेश आंयेगा दुश्बारियाँ कब तक
तुम्हें कब आयेगा आखिर यक़ींन मेरी वफ़ाओं का
मुहब्बत में मुझे देने पड़ेंगे इम्तिहां कव तक
शिफ़ा वो जल्द आयेंगे जहाँने राज़ से बाहर
तड़प ये रंग लायेगी रहेंगे बो निहां कब तक

भावार्थ १

आज प्रातः काल ब्रह्महूर्त में ध्यानास्त अवस्था में बैठे २ यह ख्याल पैदा हुआ कि उनसे मालूम तो करूँ कि मेरा नाम वैंटिंगलिस्ट में कब तक चलता रहेगा। बस ध्यान छोड़कर कलम हाथ में उठा लिया।

२ ये दिव्य आवाज़ परमपूज्य गुरुदेव की थी।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

## ग़ज़ल

खि़रद मन्द हमको कोई मान ले क्यों—
किसे हो यकीं सर में सौदा नहीं है।

कि हम ऐसे माशूक़ पर मर रहे है—
जिसे आज तक हमने देखा नहीं है ।।

झलक उसकी हमने हसीनों में देखी—
कहीं चांद सूरज में देखा है परतौ।

गुलों में मिले रंगोबू उसके बेशक—
मगर ये सब उसका सरापा नही है ।।

वयां उसका ऐहलै खि़रद से सुनां है—
हरइक बात पर अक्ल होतीं है हैरां।

सुना है बो खा़लिक़ है दोनों जहां का—
मगर वो कोई काम करता नहीं है ।।

नहीं कान लेकिन वो सुनता है सब कुछ—
नहीं आँख लेकिन तमाशई है बो।

जहाँ जाओ मौजूद पाओगे उसको—
मज़ाक़ इसमें ये है बो चलता नही है ।।

किसी से कभी उसकी की है शिकायत—
तो उल्टा हमीपे है इल्ज़ाम आया।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मुज्जसम मोहब्बत बताते हैं उसको—
हमीं ने अभी दिल से चाहा नहीं है ॥

किसी से ख़बर कोई मिलती है उसकी—
तो होती है नाएहलियत अपनी ज़ाहिर।

हमीं आज तक देखने से हैं क़ासिर—
सखै यार पर कोई परदा नहीं है ॥

तलब भी नहीं मुद्दआ भी नहीं कुछ—
तो फिर किस लिये की है उससे मुहब्बत ॥

अगर बो कहे आके क्या चाहते हो—
तो हम क्या कहेंगे ये सोचा नहीं हैं ॥

ज़रा बेबसी इश्क़ की देखियेगा—
कि बैठे हैं हरदम तसव्वुर में उपके।

उसी के कर्म से है दीदार मुमकिन—
कोई उसपे अपनां इजारा नहीं है ॥

इधर हिज्र में दिन ब दिन हाल अबतर—
उधर आज तक है बोही बेनिआज़ी।

शिफ़ा हम किसी और को प्यार करते—
मगर क्या करें कोई ऐसा नहीं है ॥



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

मुसलसल तुम्हें याद करता रहा हूँ—
तुम्हें होके मजबूर आना पड़ेगा।

मुहब्बत में तुमसे जो मैं चाहता हूँ—
तुम्हें एक दिन मान जाना पड़ेगा॥

मिरे अश्क फ़ुरक़त में बहते रहेंगे—
मगर उससे पहले कि आँखें में खोदूं।

तुम्हें मुझसे आँखें मिलानीं पड़ेगीं—
मुझे देखकर मुस्कुराना पड़ेगा॥

कई जन्म बीते मुझे चाह करते—
बहुत उम्र गुज़री मुझे आह भरते।

मिरी आस टूटे तुम्हें उससे पहले—
मिरे दिल में आसन जमाना पड़ेगा॥

नहीं दख्ल कुछ मसलहत में तुम्हारी—
मगर अब नहीं काम देगा तग़ाफ़ुल।

कि हैं ठीक मझधार में मेरी क़श्ती—
इसे अब किनारे लगाना पड़ेगा॥

मिरा हाल तुम जानते हो बख़ूबी—
कि अब मैं नहीं ग़म उठाने के काबिल।

मिरे सर पे है बारे ग़म मुद्दतों से—
मगर अब ये तुमको उठाना पड़ेगा॥



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

ये मांना था इक वक्त आबारगी का—
भटकने में भी एक लज्ज़त थी लेकिन।
मुझे रोशनी अब दिखानी पड़ेगी—
तुम्हें राह पर मुझको लाना पड़ेगा॥
मुझे तो बस इस बात का हौसला है—
कि मैं दीन हूँ और हूँ भी तुम्हारा।
उठाने का तुम क़ौल हारे हुये हो—
तुम्हें ध्यान है या दिलाना पड़ेगा॥
मिरे दिल की हालत कहाँ तक है बिगड़ी—
ये खुद देखलो दिल पे तुम हाथ रखकर।
मगर उससे पहले कि दिल साथ छोड़े—
तुम्हें मुझको खुद से मिलाना पड़ेगा॥
शिफ़ा क्या बतायें तस्ब्बुरमें कितनी—
कभी उनसे महसूस होती है कुर्वत।
मगर आँख खुलते ही लगता है जैसे—
अभी तो बहुत दूर जाना पड़ेगा॥



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

शबको सन्नाटा होता है सो जाती है जब दुनियाँ सारी
कुछ लोग फ़साना लिखते हैं उन्वान है जिसका बेदारी

गो दिल का ताआलुक़ दुनियाँ के रिश्तों से नहीं नातों से नहीं
फिर भी तो निभानी पड़ती है इस दुनियां की दुनियाँदारी

हम अस्ल में इनके शाहिद हैं जो काम बज़ाहिर करते हैं
हम अपनी हक़ीक़त आप ही हैं बाक़ी है सभी ज़ाहिरदारी

इक शर्म थी सर झुक जानें में था पास बहुत खुद दारी का
बो आये सर अपने आप झुका क्या शर्म कहाँ की खुददारी

बो और नहीं हम और नहीं परदा सा मगर जो हाइल है।
एहसासे दुई तक है बरना क्या परदा क्या परदादारी

ऐ दोस्त तेरे मिलने की खुशी दुनियाँ पे न ज़ाहिर हो जाये
इस तरह मिरे दिल में आना इक वज्द का आलम हो तारी

ये बन्दे ज़मां ये कैदे मकां जब इनसे हुये आज़ाद शिफ़ा,
तो अस्ल में खुद मुख़तार हैं हम क्या मजबूरी क्या लाचारी



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

## ग़ज़ल

जिसका भरोसा उन पर कामिल
क्या मझधार उसे क्या साहिल

प्यार हमारी ज़ीस्त का हासिल
प्यार ही जादा प्यार ही मंज़िल

कोई अनोखी बात नहीं है
वो जो हुये हैं हम पर माइल

वो पहले भी दूर नहीं थे
दुनिया आन हुई थी हाइल

दुनिया निकली रैन बसेरा
हम समझे थे इसको मंज़िल

ठीक दिया हमको ग़म अपना
एक हमी थे इसके क़ाबिल

इन आँखों में झाँक के देखो
किसकी सजी हुई है महफ़िल

है ही नहीं जब दूसरा कोई
कौन सखी है कौन है साइल

तुम तो शिफ़ा दिल उनको दे दो
जो कहना है कह लेगा दिल



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

एहले हरम भी बो नहीं एहले सनम बदल गये
आप जो थे वही रहे आप में हम बदल गये,

पहले था फ़िक्रे मा सिवा अब है ग़मे फ़िराके दोस्त
बारे अलम वही रहा माना कि ग़म बदल गये

अब तो है ज़ीस्त और भी लुत्फ़ो करम पे मुनहसिर
कैसे कहूँ कि आपके लुतफ़ो करम बदल गये

अब तो सरे निआज़ है और नकूशे पाये दोस्त
मोज़ूये तज़किरा जो हैं जाहो हशम बदल गये

पहले तो उनकी ज़ात का बहम सा था गुमां सा था
अब तो यक़ीन आ गया दिल के भरम बदल गये

उनकी निगाहे लुत्फ़ से सब उलझनें निकल गयीं
ज़ुल्फ़ के ख़मं निकल गये राह के ख़म बदल गये

उनके करम से ज़ीस्त में इक इनकिलाब आ गया
एहले करम हैं मुलतफ़ित एहले सितम बदल गये

आरी है अब तो दर्द भी ग़म के लवाज़मात से,
जिनसे थी ग़म की आबरूँ दीदायेनम बदल गये

हमतो निआज़ मंद थे आज भी हैं वही शिफ़ा
दाबाये इश्क़ था जिन्हें बो बेशोकम बदल गये ।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

अगर राज़ दुई हम पा गये फिर हम नहीं होंगे
समझ में आप जिस दिन आ गये फिर हम नहीं होंगे

हम अपने शौक़ से है आप के हर खेल में शामिल
अगर इस खेल से उकता गये फिर हम नहीं होंगे

हमें तो बांध रक्खा है हमारे दिल की ख्वाइश ने
हम अपनी ख़्वाइशों पर छा गये फिर हम नहीं होंगे

यहाँ तो आप का दीदार है इस ज़ीस्त का मक़सद
किसी दिन सामने आप आ गये फिर हम नहीं होंगे

हमारा मुद्दआ है आप मैं खुद को समो देना
कर्म कुछ आप अगर फ़रमा गये फिर हम नहीं होंगे

ये दुनियाँ आपका गुलशन हम इसमें मिसले शबनम हैं
मिसाले आफ़ताब आप आ गये फिर हम नहीं होगें

ये जिस्मो जान लेकर आप को हम ढूँढने निकले
किसी दिन आप हमको पा गये फिर हम नहीं होंगे

जुदा खुद से किया—क्यों आपने ये आप ही जानें
किसी दिन आप ही अपना गये फिर हम नहीं होंगे

शिफ़ा हम भी है जब तक आपको है रोग माया का
शिफ़ा आप इससे जिस दिन पा गये फिर हम नहीं होंगे



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

बस वही है जिन्दगी जो आपको अच्छी लगे
और वो है आगही जो आपको अच्छी लगे

आपको कुदरत में हमको चाहिए क्या इख्तियार
सबसे अच्छी वेबसी, जो आपको अच्छी लगे

कररोफ़र जाहो हशम हमको नहो कुछ चाहिए
रास है वो सादगी, जो आपको अच्छी लगे

आप के ग़म में तड़पना भी हमें मंजूर है
है वही अपनी खुशी जो आप को अच्छी लगे

हमने हर उन्वान से की है परसतिश आपकी
वो मगर है बन्दगी, जो आपको अच्छी लगे

क्या हमारे काम आई होश की चारागरी
उससे बेहतर बेखुदी, जो आपको अच्छी लगे

आपकी आँखों से अब तो हमको पीनी है शराब
होगी वो बादाकशी, जो आप को अच्छी लगे

आपकी दुनिया में यूँ तो नियमतें हैं बेशुमार
हो अता हमको वही, जो आपको अच्छी लगे

हो सके तो दीजिए अपने शिफ़ा को एक जाम
हो वही साक़ी गरी, जो आपको अच्छी लगे



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

दानिस्ता तग़ाफुल करते हैं फिर उनका भरोसा कौन करे
जब तक न इशारा हो उनका इज़्हारे तमन्ना कौन करे
हम अपना शिकस्ता दिल लेकर बाज़ारे ख़िरद में फिरते हैं
दीवाना कोई जब तक न मिले इस दिल का सौदा कौन करे
हम ज़ब्त का दामन क्यों छोड़ें जब तक है बुजुदे दिल बाक़ी
होगा तो करम हो जाएगा अब उनसे तक़ाज़ा कौन करे
इक उनके करम से दुनिया के हर ग़म का मुदावा मुमकिन है
जिस ग़म का ताल्लुक़ उनसे हो उस ग़म का मुदावा कौन करे
हम अपनी मुसीबत को अपने आमाल का हासिल कहते हैं
तौहीने मोहबत कौन करे महबूब को रुसवा कौन करे
साक़ी ने निगाहें जब फेरीं मुँह मोड़ लिया मैख़ाने से
हम रिन्द है लेकिन उल्फ़त की तज़लील गवारा कौन करे
आदाब जुदा है उल्फ़त के है राह अलग दीबानों की
दुनिया से शिफ़ा हम क्या लेंगे पाबंदिये दुनिया कौन करे



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

जब ज़बां पर हदीसे सिफ़ात आ गई
यूँ समझ लो समझ में वो ज़ात आ गई
और क्या देखता आपको देखकर
मेरी नज़रों में कुल कायनात आ गई
हिज्र के दिन रहे शाम के मुन्तज़िर
शाम आई के फिर सर पे रात आ गई
दास्तां उससे आगे न मैं कह सका
जिस जगह हिज्र की वारदात आ गई
इश्क़ तय कर चुका था कई मंज़िलें
राह में हाय फ़िक्रे निजात आ गई
मैं तो दुनिया से दामन बचा कर चला
सामने फिर वही बेसबात आ गई
कोई सुन ले तो शायद समझ ले शिफ़ा
मेरे अशआर में दिल की बात आ गई



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

दिल भी ख़ामोश है ज़बां ख़ामोश
है मोहब्बत भी इक बयां ख़ामोश
उनसे आँखों ने कह दिया सब कुछ
बाअदब थी रही ज़बा ख़ामोश
दिल किसी बावफ़ा का टूटा था
उससे आगे है दास्तां ख़ामोश
ज़ख्मे दिल ने ही लब कुशाई की
तीर ख़ामोश था कमां ख़ामोश
थे मोहब्बत के जिन में हंगामे
अब पड़ी हैं वो बस्तियां ख़ामोश
कोई आवाज़ ही नहीं आती
मैं क़फ़स में हूँ आशियां ख़ामोश
ज़ख्म दिल के शिफ़ा जिगर के दाग़
ये मोहब्बत के हैं निशाँ ख़ामोश



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

अब तुम्हारा ग़म मिरे दिल से मिटा सकता है कौन
जो तुम्हारा है उसे अपना बना सकता है कौन
या तो दीवाना हँसे या तुम जिसे तौफ़ीक़ दो
व़रना इस दुनियाँ में रहकर मुस्कुरा सकता है कौन
ज़ीस्त से ऊमीद बाबस्ता है बनके कुर्ब की
वरना इस बारे अमानत को उठा सकता है कौन
हमने आंखें बन्द करके दिल में देखा है तुम्हें
सामने आओ तो ताबेदीद ला सकता है कौन
मै हो या मस्ती बक़दरे ज़र्फ़ मिलती है शिफ़ा
और अपने ज़र्फ़ को उनसे छुपा सकता है कौन



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

तोड़ कर दिल जो दिल की दवा बन गए—
अब वही दिल पे हैं हुकमरां दोस्तो ।
वो मसीहा भी है, चारागर भी वही—
जिन से क़ायम है दर्दे निहां दोस्तो ।।
जानते हो हैं रिन्दी के आदाब क्या—
मैं किसी ग़ैर से माँगना तो कुजा ।
जुर्म हैं फिर किसी की तरफ़ देखना—
सामने हो जो पीरे मुग़ाँ दोस्तो ।।
ज़ौक़े सजदा लिए दिल में जाते कहाँ—
बेखुदी में कहाँ ढूंडते आस्तां ।
वो तो अच्छा हुआ झुक गया दिल जहाँ—
बस वहीं बन गया आस्तों दोस्तो ।।
हुस्न फ़ितरत का क्या ख़न्दाऐ गुल में है—
ग़म मोहब्बत का क्या सोज़े बुलबुल में है ।
हम समझते हैं क्या मौसमे गुल में हैं—
हमने देखा है दौरे ख़िज़ाँ दोस्तों ।।
देर से माइले जुस्तजू था शिफ़ा—
उनकी डैरा हरम में फिरा ढुंढ़ता ।
लौट कर अपने मरक़ज पे जब जा गया—
मिल गया दिल में उनका निशां दोस्तो ।।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

पुजा था तुझे दिल से हम ने ही सनम तन्हा
अब वादिये गुरबत में रक्खेंगे क़दम तन्हा
तुम एहदे मोहब्बत के पाबन्द हुए क्यों कर
मैंने तो वफ़ाओं की खाई थी क़सम तन्हा
हम आपकी राहों में पामाले मोहब्बत हैं
हम से भी कभी सुनिये रुदादे अलम तन्हा
ग़म अपने फ़सानों में औरों के भी शामिल थे
बदनाम हुए लेकिन हम एहले क़लम तन्हा
इक तुरफ़ा तमाशा थी बेगाना रवि उनकी
हमराह थे वो लेकिन थे राह में हम तन्हा
औरों ने नहीं टोका तुम ने भी नहीं देखा
हम बज्म में बैठे थे बा दीदाए नम तन्हा
हर चीज़ हमारी अब मंज़िल में फ़ना की है
बाक़ी है शिफ़ा अब तो जीने का भरम तन्हा



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# ग़ज़ल

तुम दिल में रहो या आँखों में, हर तरह मिरी मुश्किल होगी
दिल रश्क करेगा आंखों से और आँख हरीफ़े दिल होगी
तुम सामने आ जाओ भी तो क्या, अपनी ही नज़रहाइल होगी
दीदार जभी मुमकिन होगा जब आंख किसी काबिल होगी
इस नक्दी नज़र की शिददत में दुशवार है उनका नज्ज़ारा
दीदारे सनम हो जाएगा जब ख़ुद से नज़र ग़ाफ़िल होगी
अन्जाम से पहले ख़त्म हुआ हर एक मुहब्बत का क़िस्सा
क्यों कर इन अधुरे क़िस्सों से तक्मीलें किताबे दिल होगी
हो जाएगा वक्फ़े आम जहां फ़ेज़ान तुम्हारे जलवों का
हर क़ल्ब का दामन फैलेगा हर आंख वहां साइल होगी
ऐ दोस्त मैं तेरी राहों में हूँ रोज़े अज़ल से सरगरदां
दीदार जहाँ होगा तेरा अपनी तो वही मंज़िल होगी
हो जाओगे बेबाक शिफ़ा जब पुख्ता जुनुँ हो जाएगा
ख़िलवत में जो उनसे कह न सके वो बात सरे महफ़िल होगी



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# हमारे पुरखा

गुरुओं की गद्दी और परम्परा किसी न किसी औतार से जाकर मिल जाती है जो उसके इष्ट होते हैं। बहुत सी गद्दियां तो जाकर जगतगुरू आदि शंकराचार्य से जाकर मिलती है, जो औतार थे। क्योंकि इनसे पहले बुद्ध मत का ज़ोर था और वैदिक धर्म दब कर रह गया था। उसको जगत गुरू शंकराचार्य ने उभारा। चार धामों में चार मठ बनाऐ और चार गद्दियों की नीम डाली। एक श्री रामेश्वरम में है। एक श्री जगन्नाथ पुरी में, एक श्री बद्रीनारायण की। ये जोशी मठ में है और चौथी श्री द्वारका में। इन में हर गद्दी पर एक के बाद एक जितने शंकराचार्य बैठे हैं, उन सबके नाम लिखे हुए मिलते हैं।

हम अपने पुरखों का नाम लेने और स्मरण करने से उनकी तपस्या के फल के अधिकारी और उनकी कृपा के पात्र बन जाते हैं। इससे अपने मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए बढ़ा सहारा मिलता है। मुसलमान सूफ़ियों में हर एक के पास ये सूची होती है जिसको वह शिजरा कहते हैं और ये सिलसिला पीराने पौर दस्तगीर ख्वाजा अबदुल क़ादिर जीलानि और हज़रत मोहम्मद तक पहुँचता है। हर हल्के यानि सत्संग के मौके पर यह शिजरा सब मिलकर पढ़ते हैं और अपने वुजुर्गों के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं और उनके सदके में अपने लिए दुआएँ मांगते हैं।

हमारा अपना सिलसिला सन्त शिरीमणी स्वामी तुलसी दासजी महाराज से शुरु होता हैं हमारे पुरखों में दादा गुरु महराज श्री स्वामी कामता दासजी से पहले वालों का चित्र नहीं मिलता सभी परम हंस हुए हैं शायद वो लोग इसको पसन्द ही नहीं करते थे। दादा गुरु ने भी पहले कभी फ़ोटो नहीं खिचवाया था। जब मैं कैमरा लेकर उनके सामने खड़ा हूआ तो मुझे भी झिड़क दिया था और फ़रमाया कि "हम अपना चित्र किसी को नहीं देते" परन्तु थोड़ी देर के बाद दया आ गई और मुझे फ़ोटो खीचने दिया।



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इसके बाद तो मैंने उनके बहुत फ़ोटो खींचे। गुरु देव महाराज के भी सब फ़ोटो मेरे उनकी शरण में आने के बाद के ही हैं, उससे पहले का सिर्फ़ एक फ़ोटो कमला बहन के पास देखा है जो उस वक्त का है जब महाराज श्री कैलाश की यात्रा से वापिस आए थे। इसलिए जहां तक मुझे मालुम है, मैं अपने बुजुर्गों का केवल नाम ही लिख रहा हूँ। वैसे भी कलियुग में रूप से ज्यादा नाम की महिमा है।

**श्री स्वामी तुलसीदास जी महाराज**

१. श्री स्वामी बद्रीदास जी महाराज
२. श्री स्वामी पुरषोत्तम दास जी महाराज
३. श्री स्वामी मिश्री दास जी महाराज
४. श्री स्वामी शम्भु साहब जी महाराज
५. श्री स्वामी बजरंग दास जी महाराज
६. श्री स्वामी कामता दास जी महाराज
७. हृदय सम्राट प्रातः स्मरणीय श्री श्री १००८ श्री स्वामी अविनाशी जी महाराज
८. श्री शांति देवी (स्वर्गवासी)

अपनी संगत को मन की शान्ति और मार्ग पर बढ़ने के लिए इनका स्मरण नित्य दिन करना चाहिए।

## हमारे आश्रम

१. घ्यानपुर के पास पिन्डावरी पंजाव २. नया घाट अयोध्या श्री तुलशी जी की छावनी ३. पपसौरा जिला फतेहपुर (उ० प्र०) ४. कोंच जिला जालोन (उ० प्र०) ५. चन्दाडोरी जिला झांसी (उ० प्र०) ६. दादरी जिला झाँसी (उ० प्र०) ७. वर्धु जिला जालौन (उ० प्र०) ८. विलाया, जिला जालौन (उ० प्र०) ९. उरई श्री क्षतिनाशी गीता आश्रम जिला जालौन (उ० प्र०) १०. ब्रन्दावन धाम श्री अविनाशी मिशन गोशाला नगर जिला मथुरा (उ० प्र०) ११. पचोखरा जिला जालौन (उ० प्र०) १२. जामपुरा जिला भिन्ड (म० प्र०) १३. दिल्ली ६७/६८ राजेन्द्र नगर इन्डस्ट्रियल सेन्टर साहिबाबाद (यू० पी०) गाजियाबाद १४. पड़रिया जिला नरारोगपुर (म० प्र०) १५. चुरदला (चन्द्रनगर) जिला मेनपुरी (उ० प्र०)।

प्रेमलाल शिफ़ा
देहलवी



CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# श्री अविनाशी मिशन

## सदा सेवा फण्ड

हमारे परम पूज्य श्री गुरुदेव महराज का सबके लिए आदेश होता है कि परमार्थ सेवा के लिए नियम से दस-बीस पैसे या इससे अधिक श्रद्धा के अनुसार कुछ रक़म नित्य दिन निकालकर एक संदुकड़ी में डालते रहना चाहिए। इससे सेवा का स्वभाव बन जाता है, वो ही कमाई फलदायक होती है, जिसका कुछ हिस्सा धर्म के कामों में लग जाए।

मगर होता ये है कि नित्य दिन का सिलसिला चलता नहीं है, अगरचे महीने के आखिर में हिसाब लगा कर उसको पूरा तो कर देते हैं, लेकिन जो बात महाराज श्री ने बताई उसमें त्रुटि पड़ जाती है। इसलिए ये सदा सेवा फ़ण्ड जारी किया गया है, इसमें मिसाल के तौर पर एक दफ़ा १२०० रु० देने से नित्य दिन के लगभग तीस पैसे या महीने में दस रु० की सेवा आश्रम की होती रहेगी और यह सेवा ज़िन्दगी में ही नही, शरीर के पूरा होने के बाद भी चलती रहेगी। एक दफ़ा में ही नहीं तो एक सौ बीस रु० एक बार देकर उसके बाद ओर रक़म आईन्दा जब भी मौका हो और दी जा सकती है। केवल १२० रु० देने में भी महीने में एक रुपया या ३ पैसे रोज़ की सेवा हो जाती है। यह ऐसी रकम है कि छोटे २ बच्चे भी जेब खर्च में से एक रुपया रोज बचा ले तो चार महीने में रक़म इकट्ठी हो जाती है। उसको देकर सदा सेवा में भाग ले सकते हैं। दान वही उत्तम है जिसका सतपयोग हो। यह आपका रुपया श्री वृन्दावन धाम की पवित्र भूमि में खर्च होगा और इससे संतों और अतिथियों की सेवा होगी। संत साकार रूप में प्रभु का अवतार ही होते हैं और भारतवर्ष में यही दर्जा अतिथियों का भी है। "क्या जाने किस रूप में मिल जाँए भगवान।" इसलिए यह रक्म मानो प्रभु सेवा में ही खर्च होगी। दान का इससे उत्तम प्रयोग मुशकिल से ही कोई ओर होगा।

इसलिए सब बहनों, भाइयों और अज़ीज़ों से मेरी प्रार्थना है कि दिल खोलकर इस सेवा में शामिल हों।

यह रक़मआप स्वयं महराज जी को दे सकते हैं या निम्नलिखित पत्ते पर भेज सकते हैं।

**डा० प्रेमलाल शिफा**
४८३५, बाराटूटी, सदर बाजार
देहली-११०००६

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

For your ail kinds of :

## ALUMINIUM REQUIREMENTS

**Contact**

# PREM METAL SYNDICATE

**(House of Aluminium)**

10, RAGHUSHRI MARKET COMPLEX

AJMERI GATE, DELHI-110006

Phone : 268882

Resl. : 512142
512614

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

# PREM METALS

*Deals in* : ALUMINIUM IN ALL FORMS

**4610, Charkhewalan**
**Chawri Bazar**
**Delhi-110006**

Phone : 268612

Resi. : 512142
572615

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri